COHERENCE – The Multidisciplinary Research Journal
Volume No: 14, Issue No: 2, Year: 2023 (July-December)
PP: 43-48
ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

माध्यमिक स्तर के दलित छात्र-छात्राओं में शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन (पटना जिले के संदर्भ में)

सत्य प्रकाश

शोधार्थी

शिक्षाशास्त्र विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

सार–

यह अध्ययन पटना जिले के माध्यमिक स्तर के दलित छात्र-छात्राओं में शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन करना है।प्रस्तुत शोध में दो उद्देश्यों पर चर्चा की गयी है।छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि से संबंधित विभिन्न कारकों के बारे में जानकारी जुटाने के लिए प्रश्नावली का उपयोग करके एक सर्वेक्षण किया गया। छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन का आकलन दसवीं कक्षा की वार्षिक परीक्षा के परिणाम के आधार पर किया गया। छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर विभिन्न कारकों के प्रभाव की जांच के लिए माध्य, मानक विचलन, आवृत्ति प्रतिशत एवं सहसंबन्ध प्रयोग किया गया। अध्ययन की प्रकृति सर्वेक्षणात्मक है। उत्तरदाताओं का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। शोध की कुल जनसंख्या 200 है। अध्ययन के परिणामों से पता चला कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति और माता-पिता की शिक्षा का छात्रों की समग्र शैक्षणिक उपलब्धि पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।तथा इस विषय पर अभी शोध की आवश्यकता है। क्योंकि छात्रों के बेहतर भविष्य के लिए शैक्षणिक स्वरूप को निर्धारित करने के लिए उचित अवधि में शैक्षिक प्रक्रिया अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मुख्य बिन्दू- छात्र- छात्राओं, शैक्षणिक उपलब्धि, माध्यमिक स्तर, दलित,

परिचय–

शिक्षा राष्ट्र के विकास का सशक्त माध्यम है। शिक्षा सम्पूर्ण जीवन तक चलने वाली प्रक्रिया है। व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता ही रहता है, नई बातें और नये अनुभवों को प्राप्त करता रहता है। इसलिए यह कहा जाता है कि शिक्षा जीवनभर चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा एक गतिशील विषय है, इसका स्वरूप स्थिर नहीं है। शिक्षा में सरिता का स्वाभाविक प्रवाह होता है। शिक्षा का सम्बन्ध जीवन से होने के कारण उसमें गति और ग्रहण करने की शक्ति है, दूसरे शब्दों में शिक्षा एक जीवन क्रिया है।" बैटल एण्ड लुईस (2002) ने अपने शोधपत्र के निष्कर्ष में पाया कि "वैश्वीकरण और तकनीकी क्रांति के इस युग में, शिक्षा को प्रत्येक मानवीय गतिविधि का पहला कदम माना जाता है। यह मानव पूंजी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और व्यक्ति के कल्याण और बेहतर जीवन के अवसरों से जुड़ी हुई है ।प्लुटों (1807) ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ "द रिपब्लिक" के पेज न0 416 में कहा है कि "सच्ची शिक्षा वह है जो मनुष्यों को उनके परस्पर सम्बन्धों की सुरक्षा के प्रति और मानव को सभ्य बनाने की सर्वाधिक प्रवृत्ति रखती है।" लैमो एण्ड छावगां (2015)ने अपने शोध में पाया कि "चयनित माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि और वातावरण में बड़ा सह-सम्बन्ध पाया गया है।" यादव (2018 ने अपने शोधपत्र के निष्कर्ष में पाया कि "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत उच्च, मध्यम एवं निम्न पारिवारिक वातावरण के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।" सैक्सटन(2000) ने अपने शोधपत्र के निष्कर्ष में पाया कि " शिक्षा, ज्ञान और कौशल की प्राप्ति सुनिश्चित करती है जिससे व्यक्ति अपनी शैक्षणिक उत्पादकता बढ़ा सकें और जीवन स्तर में सुधार कर सकें। यह उपलब्धि आय के नए स्रोतों को भी जन्म देती है, जिससे स्वंय के साथ-साथ परिवार और देश की आर्थिक वृद्धि में योगदान होता है।" छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले कारकर में माध्यमिक विद्यालय का स्तर दूसरें छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन की गुणवत्ता है, जो शिक्षकों

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता बनी हुई है। इसका उद्देश्य स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर सकारात्मक बदलाव लाना है।शिक्षक,प्रशिक्षक और शोधकर्ता लंबे समय से शिक्षार्थियों के प्रदर्शन की गुणवत्ता में प्रभावी रूप से योगदान देने वाले कारकों का पता लगाने में रुचि रख रहे है। क्रॉस्नो, जॉनसन एण्ड एल्डर, (2004) ने अपने शोधपत्र के निष्कर्ष में पाया कि "ये कारक विद्यालय के अंदर और बाहर दोनों जगह मौजूद होते हैं जो छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। इन कारकों को छात्र कारक, पारिवारिक कारक, विद्यालय कारक और सहकर्मी कारक कहा जा सकता है।" मैन (1985) ने अपने शोधपत्र के निष्कर्ष में पाया कि "जनसांख्यिकीय कारकों की भूमिका के बारे में औपचारिक जांच 17वीं शताब्दी में शुरू हुई, सामान्यत इन कारकों में आयु, लिंग, भौगोलिक संबद्धता, जातीयता, वैवाहिक स्थिति, सामाजिक-आर्थिक स्थिति,माता-पिता की शिक्षा का स्तर, माता-पिता का पेशा, भाषा, आय और धार्मिक संबद्धता शामिल हैं,जो छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करती है।" बैलाटाइन(1993) ने अपने शोधपत्र के निष्कर्ष में पाया कि "शैक्षणिक गुणवत्ता को परिभाषित करना और मापना एक सरल मुद्दा नहीं है और विभिन्न हितधारकों के दृष्टिकोण से जुड़े गुणवत्ता विशेषताओं के बदलते मूल्यों के कारण इस प्रक्रिया की जटिलता भी बढ़ जाती है।" ब्लेविंस(2009 पैरी (2006) ने अपने शोधपत्र के निष्कर्ष में पाया कि "शैक्षिक सेवाएं अक्सर अमूर्त होती हैं और इन्हें मापना मुश्किल होता है, क्योंकि इनका परिणाम शिक्षार्थियों के ज्ञान,जीवन कौशल और व्यवहार संशोधन के रूप में होता है।" मार्ज़ानो (2003) ने अपने शोधपत्र के निष्कर्ष में पाया कि "छात्रों का शैक्षणिक प्रदर्शन शैक्षणिक सफलता में उच्च स्तर की गुणवत्ता प्राप्त करने के लिए उनकी शैक्षणिक गतिविधियों में माता-पिता की भागीदारी पर काफी हद तक निर्भर करती है।" मार्ज़ानो (2003) ने अपने शोधपत्र के निष्कर्ष में पाया कि "छात्रों का शैक्षणिक प्रदर्शन शैक्षणिक सफलता में उच्च स्तर की गुणवत्ता प्राप्त करने के लिए उनकी शैक्षणिक गतिविधियों में माता-पिता की भागीदारी पर काफी हद तक निर्भर करती है।"निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर छात्रों की उपलब्धि को बुरी तरह प्रभावित करता है, जिससे वे निचले स्तर पर चले जाते हैं।

अध्ययन का महत्व–

माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना और छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर माता-पिता की शिक्षा का क्या प्रभाव पड़ता है, पर विचार करना आवश्यक है,जो बहुत ही जटिल और चुनौतीपूर्ण कार्य है।इस शोध के अध्ययन से अनुसंधानकर्ता भिन्न कारकों की पहचान की प्रक्रिया पर पूरा ध्यान और प्राथमिकता दे पायेगें,तथा ऐसी शिक्षण रणनीतियाँ विकसित कर सकेंगें, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि सभी बच्चों को सीखने और प्रदर्शन में अपनी पूरी क्षमता तक पहुँचने के अवसर किस प्रकार मिलेंगा।अधिक विस्तृत भौगोलिक क्षेत्रों से लिए गए बड़े नमूने पर इस समस्या का गहन अध्ययन करने के लिए और अधिक शोध की आवश्यकता है, जिसमें अन्य छात्र कारक, पारिवारिक कारक, विद्यालय कारक और सहपाठी कारक शामिल हों।

उद्देश्य–

1. छात्र- छात्राओं के शैक्षणिक उपलब्धि की गुणवत्ता पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति, माता-पिता की शिक्षा और व्यवसाय के प्रभाव का आकलन करना।
2. छात्र- छात्राओं के शैक्षणिक उपलब्धि के संबन्ध में माता-पिता की शिक्षा के प्रभाव का आकलन करना।

परिकल्पना–

1. छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन की गुणवत्ता पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति, माता-पिता की शिक्षा और व्यवसाय का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

2. छात्र- छात्राओं के शैक्षणिक उपलब्धि पर माता-पिता की शिक्षा का महत्वपूर्ण प्रभाव पडता है।

शोध पद्धति–

यह वर्णनात्मक अध्ययन सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग करके किया गया था। इस अध्ययन में शामिल जनसंख्या पटना जिले के माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राएं थे। अध्ययन के लिए नमूना आकार 200 छात्र जिसमें 100 लड़के और 100 लड़कियां थी। अध्ययन को केवल जनसांख्यिकीय कारकों जैसे- छात्रों का लिंग, माता-पिता की शिक्षा, माता-पिता का व्यवसाय और सामाजिक-आर्थिक और शैक्षिक स्थिति तक ही सीमित रखा गया था। आकड़ों का एकत्रीकरण प्रश्नावली के माध्यम से किया गया।एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण वर्णनात्मक और सांख्यिकीय विधियों आवृत्ति प्रतिशत सहसंबन्ध का प्रयोग करके विश्लेषण एवं परिणाण की प्राप्ति की गयी जिसके लिए एसपीएसएस 20 का उपयोग किया गया है।

तालिका संख्या– 1 चरों का विवरण

चर	संख्या
माध्यमिक विद्यालयों की संख्या	5
छात्र की संख्या	20
छात्राओं की संख्या	20
कुल छात्र-छात्राओं की संख्या	200

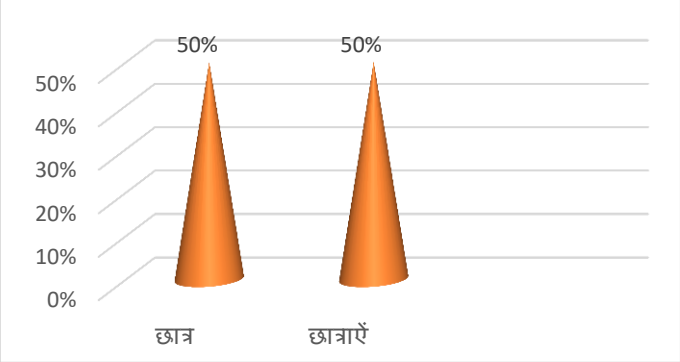
परिणाम एवं विश्लेषण–

तालिका सं.– 2 उत्तरदाताओं की आयु संबन्धी विवरण

पैमाना	श्रेणी	उ0दा0 सं0-200
		माध्य ±मा0 वि0
आयु	14-15	15.39±0.98
	15-16	
	16-17	

तालिका सं.– 2 से स्पष्ट है कि सर्वेक्षण में शामिल माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्रा उत्तरदाताओं की आयु 14-17 वर्ष थी।

आरेख सं- 1 उत्तरदाताओं की लिंग के आधार पर विवरण

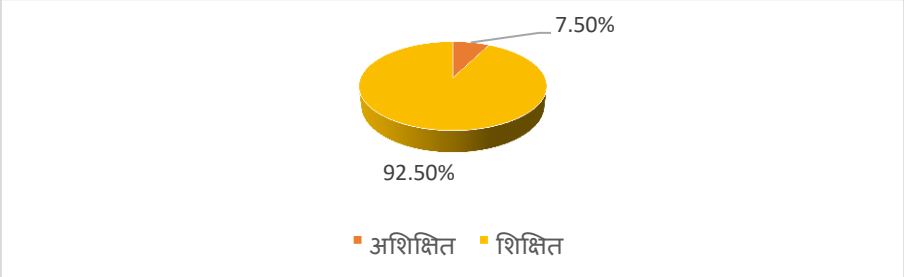


आरेख सं–1 से स्पष्ट है कि सर्वेक्षण में शामिल माध्यमिक स्तर के उत्तरदाताओं में 50 प्रतिशत छात्र और 50 प्रतिशत छात्राओं को समान रुप से शामिल किया गया था।

© Copyright @ Authors

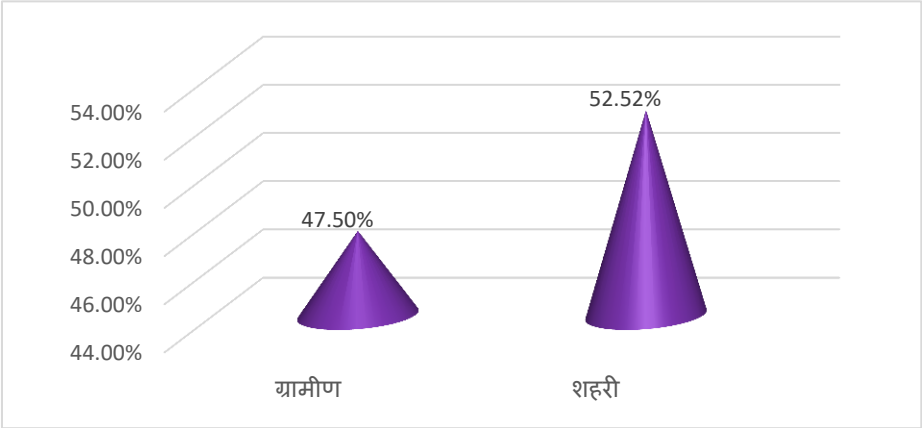
ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

आरेख सं.– 2 उत्तरदाताओं के माता-पिता का शिक्षा सम्बन्धी विवरण



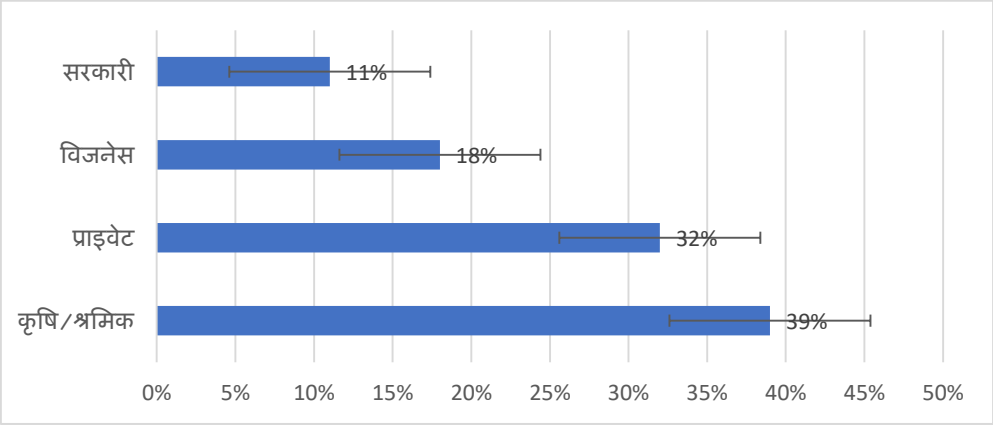
आरेख सं.– 2 से स्पष्ट है कि सर्वेक्षण में शामिल माध्यमिक स्तर के उत्तरदाताओं के माता-पिता की शैक्षणिक स्थिति में 92.50 प्रतिशत माता-पिता शिक्षित थे और 7.50 प्रतिशत माता-पिता शिक्षित थे।

आरेख सं.– 3 उत्तरदाताओं और माता-पिता के निवास से सम्बन्धी विवरण



आरेख सं.– 3 से स्पष्ट है कि सर्वेक्षण में शामिल माध्यमिक स्तर के उत्तरदाताओं और उनके माता-पिता के निवास सम्बन्धी स्थिति में सर्वादिक 52.50 प्रतिशत माता-पिता और उनके बच्चे शहरी क्षेत्र में और उससे कम 47.50 प्रतिशत माता-पिता और उनके बच्चे ग्रामीण क्षेत्र के निवासी थे। जो पढ़ाई करने के लिए पटना आये हुए थे।

आरेख सं.– 4 उत्तरदाताओं के माता-पिता के व्यवसाय से सम्बन्धी विवरण



आरेख सं.– 4 से स्पष्ट है कि सर्वेक्षण में शामिल माध्यमिक स्तर के उत्तरदाताओं के माता-पिता सबसे अधिक 39 प्रतिशत कृषि/श्रमिक के व्यवसाय से जुड़े हैं एवं उससे कम 32 प्रतिशत प्राइवेट व्यवसाय से

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

उसके बाद 18 प्रतिशत विजनेस और सबसे कम 11 प्रतिशत उत्तरदाताओं के माता-पिता सरकारी नौकरी से संबन्धित है। इसी के जैसा परिणाम राउज़ और बैरो(2006) को भी मिला कि "आर्थिक रूप से वंचित माता-पिता अपने बच्चों की उच्च शिक्षा का खर्च वहन करने में कम सक्षम होते हैं और परिणामस्वरूप वे अपनी पूरी क्षमता से काम नहीं कर पाते हैं।"

तालिका सं.– 3 माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि का स्तर

पूर्णांक	प्राप्तांक	प्राप्तांक का प्रतिशत	छात्र-छात्राओं की संख्या	छात्रों का %	शैक्षणिक उपलब्धि का स्तर
600	360 से उपर	60 से उपर	55	27.5	उच्च
	300-359	50-59.99	125	62.5	मध्यम
	259 से कम	50 से कम	20	10	निम्न

तालिका सं.– 3 से स्पष्ट है कि सर्वेक्षण में शामिल माध्यमिक स्तर के सर्वाधिक 62.5 प्रतिशत छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि का स्तर मध्यम है एवं 27.55 प्रतिशत छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि का स्तर उच्च और सबसे कम 10 प्रतिशत छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि का स्तर निम्न है।

तालिका सं.– 4 दलित छात्र- छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर माता-पिता की शिक्षा का प्रभाव

चर	सं0	r vlue	सार्थकता का स्तर
छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि			
माता पिता की शिक्षा	200	.225**	.001

तालिका सं.– 3 से स्पष्ट है कि सर्वेक्षण में शामिल माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर माता-पिता की शिक्षा का प्रभाव पड़ता है। और यह परिणाम .001पर सांख्यिकीय रुप से अत्यधिक सार्थक भी है। ऐसा ही परिणाम त्सिनिडौ,गेरोगियानिस एण्ड फिटसिलिस (2010) को अपने शोधपत्र के निष्कर्ष में मिला कि "शिक्षित माता-पिता अपने बच्चों को ऐसा वातावरण प्रदान कर सकते हैं, जो उनके बच्चों की शैक्षणिक सफलता के लिए सर्वोत्तम हो।"

सीमाएँ–

यह अध्ययन केवल केवल पटना के माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि और कुछ कारक तक सीमित रखा गया है इसलिए यह प्रत्येक जिले पर लागू नही किया जा सकता।

निष्कर्ष–

निष्कर्ष स्पष्ट है कि छात्रों के माता-पिता की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का उच्च स्तर छात्रों की उपलब्धि की गुणवत्ता में योगदान देने वाला सबसे अच्छा सूचक है। इतना ही नही बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि के संदर्भ में माता-पिता की शिक्षा का भी अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। तथा विद्यालय के अंदर और बाहर कई ऐसे कारक हैं जो छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन की गुणवत्ता में योगदान करते हैं।

संदर्भ सूची–

- शमीम आरा हुसैन(2013) "माता-पिता का संतान से सम्बन्ध तथा उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन", एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड टेक्नोलॉजी, वॉल्यूम 3(2),पृ०338-341।
- प्लूटो (1807) द रिपब्लिक, जोवेट, हार्वड युनिवर्सिटी प्रेस, लंदन पृ० 416-17
- मार्ज़ानो, आर.जे. (2003). स्कूलों में क्या काम करता है: अनुसंधान को कार्रवाई में बदलना। अलेक्जेंड्रिया: पर्यवेक्षण और पाठ्यक्रम विकास संघ

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

- ओनेस्टो, लौमो एवं अन्य (2015) इन्फ्लुएन्स ऑफ होम इनवायरमेण्ट ऑन स्टूडेन्ट्स एकेडेमिक परफार्मेन्स इन सेलेक्टेड सेकेण्डरी स्कूल्स इन अएसा म्यूनिस्पिलटी, जर्नल ऑफ नोबेल एप्लाइड साइंसेसं, 15, पृ0 1049-1054
- एंथोनी, ओ0 ओवेटा (2014) "होम इनवायरमेण्टल फैक्ट्रस इफेक्टिंग स्टूडेन्ट्स, एकेडेमिक परफार्मेन्स इन एबिया स्टेट, नाइजीरिया, रूरल इनवायरमेण्ट, एजूकेशन पर्सनाल्टी-जेलगावा" पृ0 141-179
- कुमार संतोष (2018) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण के सन्दर्भ में उनके शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एडवांस्ड एजुकेशनल रिसर्च, खंड 3; अंक 2; मार्च 2018; पृष्ठ संख्या 295-297।
- Rouse, C. E., & Barrow, L. (2006). U.S. elementary and secondary schools: equalizing opportunity or replicating the status quo?. The Future of children, 16(2), 99–123.
- Biswas, P.(2015) Mahatma Gandhi's views on peace education. Education Journal, vol-4(1),p. 10-12.

© Copyright @ Authors